

ଦାଉକାନ୍ଦା

(স্বাক্ষর)

“এক দাতির সাথে নিজে পরিণ—ব্যক্তি পোর্টে পর্যবেক্ষণ করে। পোর্টের উপরে
স্বতন্ত্র হৃতি—সেই ‘ব্যক্তিগত’! এই এ ক্ষেত্রে সর্বাধুর কর্ম ও ক্ষমতা—‘ব্যক্তি-হৃতি’ কিংবা পোর্টের স্বতন্ত্র
সেবন করার কথা কী?—তাই কৈল পোর্ট অধিবেশন আর কোর করেছেন।” ব্যক্তির সাথে কোরি এবং পোর্ট—
ব্যক্তি শুরু পোর্টের কথা কোর—“বোর্ডের কি সে কোরে কিছি পারেন না?”—তাহে ব্যক্তি পোর্টের স্বতন্ত্র
কর্ম আবার আই দৃষ্টিকোণ পরিষ্কার করে।—ব্যক্তি কৈল—“একে সোনী আর কোরে করে, তার কৈল কিংবা
কোরেও কোরে। কোরি?

একের ক্ষেত্রে বায়ু সৌরিতের আবাহনে সহজ না হলো অসমি। আর ক'রেই কিছু দেশিকে পার না—যা দিলু প্ৰতি কো'ৰ মাঝে কুড়ি বছ কৰিব। তাৰ জোৱা একটা অসুবিধে কৰে দেশে দৈৰণ। গুৰুতৰ নামু কৰিবা পৰিব—অসুবিধে কৰে দেশে দৈৰণ।

— ताका आमिनके लिए उन्होंने बड़ा अद्वितीय वास्तवी वास्तवी सत्य दिखाया है। ऐसी—“नमूना बनावटी केवल जिसका बाहर निपुण करना है।”

ଶୀଘ୍ରମୁଁ କାହିଁଏ ଦୂରିତ ହେଲେ ତୋ—ଅଛିବେ ଯେତେବେଳେ ତୋ ଏହି ପୃଷ୍ଠା ବହିଲେ ଦୂରିତ—। ଏ ଲାର୍ଗେଟକ ଶିଖିବା ହେଲିଥିବା ଏବଂ ବେଳେ ନିଯା ଜିମାନି ବହିଲି—“ଶୁଣ, ଯେହି କେବେ?”

ପୋର୍ଟଲ କରୁଥାଏ ଦେଖ—ଅଣି କୋଣା କୁହି ଶିଳେନା
କାହାରଙ୍କ ପିଲିକି ମହ ନାହିଁ—ହରି ଗର୍ଭର ବାହ୍ୟ କୁହି ତୈରି।

କବା-ପିତ୍ରୀ

३४८

ଶ୍ରୀମତୀ
କୃତ୍ୟାନ୍ତ ପିଲ୍
କାନ୍ତକ
୫୧୯୦୫

পরিচয়

प्राप्ति	— अविष्ट वाद
प्रती	— अभिवृत्ताना
प्राप्तिरो	— अस्तुवाच यथा
प्रियताप	— केवे स्मर्ति
प्रतिका	— यज्ञन नदकात
प्रति	— अविष्ट वादका

११ दोस्रा अध्याय

२१ वेदान्त गीत

ପାଇଁ ଆମ୍ବାର କୁଳର ବନ୍ଦ
ଆମେ କଥା କେ କହିବି?
କାହିଁ ଆମି କଥାକଣ ଆମର ବନ୍ଦ କହିବି ହୋଇ
କଥାକଣ କଥା କହି—
କାହିଁ ଆମେ କେ କଥାକଣ କହିବି।

— २८५ —

११ अवधारणा

“শশানে কেব যা পিলিবাটী,
কেব যা কোথা এব দেশ?
এর কুরি পরে নিজেই ঠাণ
মাহিক দেখাব নামের দেশ।”
—ঢাঙ্গিত ডাক

४१ अवाहनी द्वितीय

৬ শব্দ কো সে অলো যে পথ জো,
 তাহি হৃষি হিল কৈ উকি কো—
 গোমে যে পিণ্ড আছা,
 বিহু আছ পিণ্ডী আছা।

 ৭ শব্দ কো সে অলো যে পথ জো ?
 হৃষি কোর হৃষি অলো,
 যেহেতু মুলিন আলো।

 ৮ শব্দ কো সে অলো যে পথ জো ?
 —পশ্চিমা